# ''मैं सोचता हूं इसलिए मैं हूं।''

जब देकार्त प्रत्येक चीज पर संदेह कर रहे थे और असंदिग्ध और सत्य ज्ञान की तलाश में थे तभी उनका ध्यान इस ओर गया कि कम से कम एक चीज है जिस पर संदेह नहीं किया जा सकता और वह है, ''मैं सोचता हूं इसलिए मैं हूं।'' लेकिन सवाल उठता है कि इसका मतलब क्या है और यह असंदिग्ध कैसे है ?

देकार्त कहते हैं कि यह संभव नहीं है कि 'सोचने वाले मन' पर संदेह किया जाए। यदि हमारा मन सोचने का काम कर रहा है तो उसका होना निश्चित है। इसलिए बाकी सभी चीजों की बनिस्बत 'मन' का अस्तित्व असंदिग्ध है और यदि मेरा सोचना बंद हो जाए तो मेरे होने के बारे किसी तरह का प्रमाण नहीं होगा। अर्थात् यदि मैं सोचता हूं तो इससे सोचने वाले मन का असंदिग्ध ज्ञान तो होता ही है। 'मैं' एक ऐसी चीज हूं जो सोचता है और मेरे अस्तित्व का सार इसी में है कि मैं सोचता हूं। सोचने के लिए किसी भी भौतिक चीज की जरूरत नहीं है। लेकिन देकार्त अपने से ही सवाल करते हैं कि यह कैसे सिद्ध होता है कि 'मैं सोचता हूं'? इसके जबाव में वह कहता है कि यह असंदिग्ध है और एकदम स्पष्ट एवं सुनिश्चित है। इससे आगे वह एक और सिद्धान्त देते हैं कि, ''सभी चीजें जिन्हें हम बहुत ही स्पष्ट और सुनिश्चित रूप में ग्रहण करते हैं वे सत्य हैं।''

यहां देकार्त 'सोचने' का आशय व्यापक अर्थों में लेते हैं। अर्थात् उनका सोचने से आशय– समझना, महसूस करना, नकारना, संकल्प करना, कल्पना करना आदि से है। वे कहते हैं कि सोचना मन का सार तत्व है। मन हमेशा सोचता है, सिर्फ जागृत अवस्था में ही नहीं बल्कि गहरी नींद में भी सोचता है।

यदि देकार्त के इस वाक्य को, ''मैं सोचता हूं, इसलिए मैं हूं'' को समझने के लिए थोड़ी देर के लिए उल्टा करके देखा जाए तो यह ''मैं नहीं सोचता, इसलिए मैं हूं'' बनता है। इस कथन के बारे में कहा जाएगा कि इस कथन से भी सोचने वाले मन का होना सिद्ध होता है क्योंकि यह भी ''मैं नहीं सोचता इसलिए मैं हूं'' सोचने वाला मन ही यह कह रहा है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि देकार्त अपनी संदेह की विधि से एक ऐसे मन की सत्ता पर पहुंचते

हैं जिसका होना निश्चित है और उस पर संदेह नहीं किया जा सकता। इसी क्रम में वह आगे कहता है कि बाकी लोगों के 'मन' से मेरा 'मन' कहीं ज्यादा स्पष्ट और निश्चित है।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि देकार्त सभी चीजों पर संदेह करते हुए सोचने वाले मन की असंदिग्धता पर पहुंचते हैं। उन्होंने इन्द्रिय अनुभवों को संदेह की नजर से देखा। मन अथवा बुद्धि द्वारा प्राप्त होने वाले ज्ञान को उन्होंने असंदिग्ध और निश्चित माना। दर्शन के क्षेत्र में देकार्त का यह महत्त्वपूर्ण योगदान है कि उन्होंने अपनी संदेह की विधि से उन सभी विश्वासों पर सोचने के लिए प्रेरित किया जिन्हें हम सत्य माने बैठे रहते हैं। यदि व्यक्ति के मन में एक बार संदेह की प्रक्रिया शुरू हो गई तो इसके मायने हैं कि उसके दायरे में वे सभी विश्वास आ जाते हैं जिन्हें हम चाहे रोजमर्रा की जिन्दगी के बारे में मानते हों अथवा जो हमें हमारी परंपरा से मिलें हो या फिर धर्म के बारे में माने गए हों।

000